रामकाव्य परम्परा में तुलसी का औचित्य

डॉ. दीपिका वर्मा

रामकाव्य परम्परा से मेरा अभिप्राय उन कवियों एवं काव्यों से है, जिन्होंने रामकथा को अपने काव्य का विषय बनाया। रामभक्त कवियों ने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम, महामानव एवं ईश्वर कहकर संबोधित किया है। धर्म के रक्षक, मानवता के त्राता, लोकनायक श्रीराम भारत भूमि के कण–कण में विद्यमान हैं। समय की विषम, प्रतिकूल तथा आतंकी परिस्थितियों ने श्रीराम को उत्पन्न किया, तब से लेकर हर युग में इनका आदर्श और प्रेरणादायक जीवन जनमानस को सत्य का पथ दिखलाता आ रहा है। यह माना जाता है कि आदिकवि महर्षि वाल्मीकि से अनेक शताब्दियों पूर्व ही रामकथा को लेकर आख्यान–काव्य की रचना होने लगी थी, किंतु उस साहित्य के अप्राप्य होने से वाल्मीकि कृत रामायण को ही प्राचीनतम उपलब्ध रामकाव्य माना जाता है। वाल्मीकि कृत 'रामायण' जो संस्कृत में है, रामकथा का मूल स्रोत कही जाती है। रामायण को आदिग्रंथ की संज्ञा से विभूषित किया गया है। इस ग्रंथ में बुद्धावतार का वर्णन नहीं मिलता, इस कारण विद्वानों ने इसका काल बुद्ध पूर्व माना है। रामायण के तीन पाद हैं – दक्षिणात्य, गौड़ीय और पश्चिमोत्तरी। उत्तर भारत में 'रामकथा' को फैलाने का कार्य आचार्य रामानुज की परम्परा में 'राघवानंद' ने किया था। राघवानंद के शिष्य रामानंद थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्वामी रामानंद को रामकथा काव्य का हिन्दी कवि माना है।[1] जब मुगलों अथवा यवनों का आक्रमण भारत पर प्रारम्भ हो गया, यहाँ का धर्म त्राहि–त्राहि कर रहा था, उसी समय रामानंद दक्षिण भारत की भक्ति को उत्तर भारत में लेकर आए थे –

''भक्ति द्राविड़ उपजी, लाये रामानंद।''[2]

रामकथा और रामकाव्य के नायक राम के व्यक्तित्व में कितनी ऐतिहासिकता और कितनी कवि कल्पना है, यह कहनातो बहुत कठिन है। परन्तु इस बात में कोई संदेह नहीं है कि वाल्मीकि के महाकाव्य 'रामायण' ने ही सर्वप्रथम महामानव राम को लोकनायकत्व प्रदान किया। राम का जो गौरवपूर्ण चरित्र जगविख्यात है, उसका श्रेय महर्षि वाल्मीकि को ही है। उनके बाद रामकाव्य की परम्परा को आगे बढ़ाया जयदेव, कालिदास और तुलसीदास आदि जैसे महान् कवियों ने। उन्होंने वाल्मीकि रामायण की कथावस्तु का अपनी–अपनी शैली में उपयोग कर रामोपाख्यान प्रस्तुत किए। हिन्दी और संस्कृत साहित्य की इस परंपरा ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र को और अधिक व्यापक बनाया।

वाल्मीकि रामायण, महाभारत और भागवत पुराण मध्ययुगीन भारतीय संस्कृति के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। धर्म कथाओं में राम कथा का अपना विशेष महत्त्व है। सर्वप्रथम वाल्मीकि रामकथा के प्रवर्तक थे। इसमें राम को एक मानव रूप में अंकित किया गया है। वैदिक साहित्य में रामकाव्य का समग्र रूप क्रमशः चाहे न मिले परन्तु उसके समस्त चारित्रिक बीज सूत्र अवश्य प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के दशम् मण्डल में राम, दशरथ, सीता, जनक, आदि नाम मिलते हैं।[3] महाभारत में द्रोण पर्व, शान्ति पर्व और आरण्यक पर्व में चार स्थलों पर रामकथा का वर्णन मिलता है। हरिवंश, वायु, विष्णु, भावगत्, अग्नि, गरुड़, स्कन्द, ब्रह्माण्ड आदि पुराणों में भी राम कथा का उल्लेख पाया जाता है। साथ ही प्राचीन वैष्णव संहिताओं और उपनिषदों में भी राम का उल्लेख मिलता है। अगस्त्य संहिता, कलिराघव और राघवीय संहिता में राम के प्रति दास्य भाव की भक्ति का वर्णन किया गया है। वर्तमान से 400 ई. पूर्व के लगभग रामकथा अत्यधिक लोकप्रिय हो चुकी थी। बौद्ध धर्म में बोधिसत्व को राम का अवतार माना गया। बौद्ध जातक कथाओं में राम की कहानी 'दशरथ जातकं' में प्राप्त होती है। किन्तु जैन धर्म में बौद्ध धर्म की अपेक्षा विस्तारपूर्वक राम कथा

वर्णित है। जैन साहित्य में विमल सुरि द्वारा रचित 'पउम्चरियम्' की कथा वाल्मीकि रामायण की कथा के बहुत निकट है। इसके अतिरिक्त जैन साहित्य में गुणभद्र का 'उत्तरपुराण', हरिषेण का 'कथाकोष', स्वयंभू का 'पउमचरिउ', पुष्पदंत का 'महापुराण', भुवनतुग का 'सियाचरितम्' और 'रामचरियम्' प्रमुख है।

रामकाव्य की सर्वाधिक समृद्ध परम्परा संस्कृत साहित्य में मिलती है। संस्कृत में महर्षि वाल्मीकि से पूर्व भी रामकथा प्रचलित थी, यह तथ्य स्वयं वाल्मीकि ने स्वीकार किया है।[4] रामकथा को आधार बनाकर संस्कृत मे और भी काफी नाटक लिखे गए, जिसमें कालिदास का रघुवंश नामक महाकाव्य प्रसिद्ध है, जिसके नवम् सर्ग से षोडश सर्ग तक रामकथा का ही वर्णन किया है। भास द्वारा रचित 'प्रतिमा' और 'अभिषेक' नाटक, भवभूति रचित 'महावीर चरितम्' और 'उत्तररामचरितम्', मुरारी रचित 'अनगराघव', रामेश्वर का 'बालरामायण' तथा 'हनुमान्नाटक', कुमारदास रचित 'जानकीहरण', क्षेमेन्द्र रचित 'रामायण मंजरी' और 'दशावतार चरित' महाकाव्यों में राम कथा का ही वर्णन है।

भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से रामकथा की समृद्धि अपार है। भारत में ही नहीं अपितु भारत की सीमाओं के पार सिंहल, तिब्बत, श्याम, बर्मा, कम्बोडिया आदि देशों में भी रामभक्ति के विभिन्न रूप प्राप्त हुए हैं। भारत की लगभग सभी भाषाओं में रामकाव्य की विशाल परम्परा का विकास दृष्टिगत है।[5] सिंधी भाषा में श्रीसंत रामदास साइल कृत 'रामकथा', उर्दू में श्री द्वारिका प्रसाद कृत 'मसनवी रामायण', पंजाबी में गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा रचित 'रामावतार', कश्मीरी में श्री दिवाकर प्रकाश कृत 'रामायण', तमिल में महाकवि कम्बन कृत 'कम्ब रामायण' मलयालम में श्री काम्बुगल नीलकण्ड पिल्लै द्वारा रचित 'रामचरितमानस', कन्नड़ में नरहरि कृत 'तौरव रामायण' उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं। इसके अतिरिक्त बंगला में कृतिवास का 'कृतिवासी रामायण', मराठी में एकनाथ का 'भावार्थ रामायण', असमिया में माधव कंदली का 'पद–रामायण', शंकर देव का 'गीति रामायण', माधव देव का 'कथा रामायण', तेलुगु में भास्कर का 'भास्कर रामायण', गुजराती में कवि मालण का 'गुजराती रामायण' आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी में रामकाव्य का विवेचन तुलसीदास को ही मध्य में रखकर किया जा सकता है। तुलसी पूर्व हिन्दी में राम कथा का साहित्य अधिक विस्तृत नहीं है। हिन्दी में सबसे पहले चन्दबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' नामक महाकाव्य के द्वितीय समय में रामकथा का वर्णन है। इसमें दशावतारों का वर्णन किया गया है।[6] कवि ने जहाँ एक ओर रामवतार का वर्णन वाल्मीकि रामायण के अनुसार किया है वहीं दूसरी ओर युद्ध कांड की कथा बड़े विस्तार से की है। रामकाव्य परम्परा की प्रथम रचना गोस्वामी विष्णु दास रचित वाल्मीकि रामायण हिन्दी में उपलब्ध होती है। इन्होंने प्रत्येक कांड को सर्गों में विभक्त किया है। ईश्वरदास दिल्ली के बादशाह सिकंदर शाह के समकालीन थे। रामकथा से संबंधित उनकी रचनाएँ 'भरत मिलाप' और 'अंगदपैज' प्रमुख हैं। भरत मिलाप में राम वनवास के पश्चात् भरत ननिहाल से लौटने, दशरथ की अन्त्येष्टि, राम को लौटाने के लिए भरत की चित्रकूट यात्रा तथा चरणपादुका लेकर अयोध्या आने तक की कथा का वर्णन है। सूरदास ने भी सूरसागर में रामकथा से संबंधित कुछ पदों की रचना की है। सूरसागर के नवें स्कन्ध में राम जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा का वर्णन किया है। आदिकालीन कवियों में स्वामी अग्रदास और नाभादास का उल्लेख प्राप्त होता है। अग्रदास की रचनाओं में 'ध्यान मंजरी', 'अष्टयाम', 'पदावली', 'राम–भजन–मंजरी' और 'उपासना बावनी' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'अष्टयाम' इनकी सर्वप्रमुख रचना है। नाभादास की 'भक्तमाल' एक श्रेष्ठ काव्य कृति है। सन् 1559 ई. के लगभग रचित सुन्दरदास कवि की रचना 'हनुमान–चरित' भी इस परम्परा की सुन्दर रचना है।[7] इसके अतिरिक्त विद्यापति ने भी राम और सीता के भक्तिपरक पद गाये। यद्यपि इन पदों की संख्या कम है तथापि वे राम–काव्य–परम्परा के समर्थ संवाहक है।[8] साथ ही प्रेममार्गी शाखा के संत कवि जायसी के 'पद्मावत' में भी रामकथा के प्रसंग यत्र–तत्र स्फुट रूप में मिलते हैं। पद्मावत पर रामकथा का यह प्रभाव तत्कालीन समाज पर उसके

प्रभाव का द्योतक है। निम्नलिखित पंक्तियाँ इस कथन का प्रमाण देती हैं –

''हनुमत वीर लंक जहि जारी। परवत उहै रह रख बारी।
बैठि तहाँ होइ लंका ताका। छठये मास देश उठि हांका।।''[9]

रामभक्त कवियों की परम्परा में तुलसीदास का नाम सर्वोपरि है। भक्तिकालीन रामकाव्य परम्परा में तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस', 'रामलला–नहछू', वैराग्य–संदीपनी, 'बरवै–रामायण', 'पार्वती मंगल', 'रामाज्ञा–प्रश्न', 'दोहावली', कवितावली, 'गीतावली', 'श्रीकृष्ण–गीतावली एवं 'विनय–पत्रिका' प्रमुख हैं। इसमें वैराग्य–संदीपनी और श्रीकृष्ण–गीतावली के अतिरिक्त अन्य सभी कृतियाँ रामकाव्य परम्परा की महत्त्वपूर्ण रचनाए हैं। रामचरितमानस रामकाव्य परम्परा का श्रेष्ठतम ग्रंथ है।

तुलसीदास के समकालीन कवियों में मुनिलाल प्रमुख हैं। इनके द्वारा रचित 'रामप्रकाश' नामक काव्यकृति प्राप्त है। इस पर रीतिकालीन प्रभाव स्पष्ट है।[10] संवत् 1667 में प्राणचन्द चौहान की रचना 'रामायण महानाटक' नामक रचना प्राप्त होती है। इसमें दोहा और चौपाई छन्दों की प्रधानता है।[11] संवत् 1675 में माधवदास चारण द्वारा रचित 'अध्यात्म–रामायण' नामक रचना प्राप्त होती है। पंजाब प्रांत के निवासी हृदयराम भी रामकाव्य परम्परा के विख्यात कवि हैं। सम्वत् 1680 में इनके द्वारा रचित 'हनुमन्नाटक' नामक काव्य–कृति प्राप्त होती है। इस पर संस्कृत के 'हनुमन्नाटक' का प्रत्यक्ष प्रभाव है। इसमें कवित्त, सवैया आदि छंदों का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त तुलसी के समकालीन कवि नरसिंह बारहट द्वारा रचित 'पौरुषेय–रामायण' भी रामकाव्य परम्परा की सशक्त कड़ी है। साथ ही इस समय में लालदास की 'अवध विलास', सेनापति द्वारा रचित 'कवित्त रत्नाकर' नामक कृति प्राप्त होती है। भक्तिकाल में रामकाव्य में श्रीराम के मर्यादित रूप के साथ लोकमंगल की भावना भी विकसित हुई है।

रीतिकाल में रामकाव्य परम्परा के अन्तर्गत आचार्य केशव द्वारा रचित 'रामचन्द्रिका' महत्त्वपूर्ण काव्यग्रंथ है। डॉ. परमलाल गुप्त का मत है कि यदि नूतनता की दृष्टि से देखा जाय तो 'रामचन्द्रिका 'रामचरितमानस' की अपेक्षा अधिक अभिनन्दनीय है। विविध छन्दों, अलंकारों आदि की योजना में केशवदास जी का पांडित्य देखा जा सकता है।[12] इसके बाद ऋषिदेव डोगरा द्वारा रचित 'रामायण छंद' नामक प्रबंध काव्य प्राप्त है। साथ ही इसमें गुरु गोबिंद द्वारा रचित 'रामावतार', नवलसिंह का 'रामचन्द्रविलास', 'आल्हा रामायण', 'अध्यात्म रामायण', 'रूपक रामायण', 'सीता–स्वयंवर', 'राम–विवाह खण्ड', 'मिथिला खण्ड' आदि प्रमुख हैं। इसके साथ ही महाराज विश्वनाथ द्वारा रामकाव्य परम्परा में 32 ग्रन्थों की रचना की है। जिसमें 'रामायण–गीता', 'रामचन्द्र की सवारी', 'आनन्द–रामायण' आदि प्रमुख हैं। सूरजराम पंडित द्वारा रचित 'जैमिनी पुराण भाषा', कविवर गणेश द्वारा रचित 'श्लोकार्थ प्रकाश' तथा 'हनुमत पच्चीसी', कविवर गोकुलनाथ द्वारा रचित 'सीता–राम–गुणार्णव' तथा मनियार सिंह द्वारा रचित 'सौन्दर्य–लहरी', 'हनुमत–छब्बीसी' और सुन्दरकाण्ड नाम रचनायें रामकाव्य परम्परा में महत्त्वपूर्ण है। रीतिकाल में रामकाव्य परम्परा में अन्य कवियों के काव्य ग्रंथ इस प्रकार हैं –

प्रताप कवि–रामचन्द्र जी का नख शिख
रामचन्द्र–सीता–चरित्र
मंडन–जनक पचीसी
सुखदेव मिश्र–दशरथ राय
सहज राम वैश्य–रघुवंश दीपक
मधुसूदन–रामाश्वेमेघ
खुमान–हनुमान–पंचक,हनुमान–पचीसी,
लक्षमण–शतक
कृपाराम–चित्रकूट–महात्म्य
लछिराम–सियाराम चरण–चंद्रिका
हरबख्श सिंह–रामायण–शतक
लालमणि–अद्भुत रामायण
सोढ़ी मेहरबान–आदि रामायण
साहब राय–रामायण–पुराण
साहबदास–लव–कुश कथा
शिवसिंह–रामचन्द्र चरित्र
रामनाथ–जानकी–पचीसी
प्रेमसखी–श्री सीताराम नख–शिख
महाराजदास–श्रीराम–प्रेममंजरी
जानकीवर सरण–'प्रीतिलता', मिथिला महात्म्य

महाराज रघुराज सिंह–राम–स्वयंवर
हरियाचार्य–जानकी–गीत, आदि।

आधुनिक काल की काव्यधारा में रामभक्ति परम्परा का विशाल साहित्य प्राप्त होती है। भारतेन्दु युग का समय 1870 से 1900 ई. तक माना जाता है। इस युग की रामकाव्य धारा में रीतिकाल का प्रभाव दिखाई देता है। इस युग में भारतेन्दु द्वारा रचित 'दशरथ–विलाप' नामक रचना उपलब्ध है जो खड़ी बोली की प्रथम कविता भी मानी जाती है।[13] भारतेन्दु जी ने 'श्रीराम–लीला' नाम से एक चंपू काव्य भी लिखा, जिसमें बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड की कथा कही गयी है। साथ ही इस युग में अक्षय कुमार द्वारा रचित 'रसिक–विलास–रामायण', बदरी नारायण चौधरी प्रेमधन की 'प्रयाग रामागमन', बालमुकुन्द गुप्त का 'रामस्तोत्र', राधा वल्लभ जोशी का 'विजयोत्सव', शिव प्रसाद का 'छप्पै रामायण', शिवप्रसाद का रामराज्याभिषेक आदि ग्रन्थों में रामकाव्य परम्परा का ब्रज भाषा में प्रभाव देखने को मिलता है। इस युग की अन्य रचनाएँ इस प्रकार हैं –

रामलोचन मिश्र–रामायण महत्त्व, रामनाम महिमा, रामनाम भजनावली, आल्हा रामायण, ग्यावासी रामायण, सरोज रामायण, मनोहर रामायण।
शिव प्रसाद–छप्पै रामायण, छन्द रामायण, हरदण्ड–रामायण
पं. अकडूलाल वैद्य–पारिजात रामायण
भक्तरत्न हरिदास–रामरहस्य, दासरथी–दोहावली, कोसलेस कवितावली, रामललाम, पदरत्नावली
मदन भट्ट–रामरत्नाकर
राजा फतेहसिंह वर्मा–रामचन्द्रोदय
शीतल प्रसाद सिंह–सीताराम चरितामृत
जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'–नवपंचामृत–रामायण
उपर्युक्त विवरण अनेक ग्रंथों के आधार पर प्रस्तुत है।[14]

द्विवेदी युग सन् 1990 ई. से 1920 ई. तक रामकाव्य परम्परा में प्रबंध काव्यों और स्फुट कविताओं के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होता है। लाला भगवानदीन कृत 'रामचरणाकमाला', रायदेवी प्रसाद पूर्ण कृत 'राम का धनुर्विद्या–शिक्षण', गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' द्वारा कृत 'राम–वन–गमन', 'बंधु–विलाप', 'कौशल्या–विलाप' और 'अशोक–वाटिका में सीता', अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'वीरवर–सौमित्र', 'सुतवती–सीता', 'सती–सीता' और 'वैदेही–वनवास' प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त मैथिलीशरण गप्त का 'साकेत', 'पंचवटी', 'लीला' और 'मेघनाद–वध' प्रसिद्ध है। इस रामकाव्य परम्परा में मैथलीशरण गुप्त रामकथा की महत्ता दर्शाते हुए कहते हैं कि –

''राम, तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाए, सहज संभाव्य है।''[15]

इसके अतिरिक्त इस काल में अन्य कवियों द्वारा लिखी रचनाओं का उल्लेख इस प्रकार है –
रामचरित उपाध्याय–रामचरितावली,
रामचरित–चन्द्रिका, रामचरित–चिंतामणि
श्री विष्णु–सुलोचना सती
रामस्वरूप टंडन–सीता परित्याग
पं. बलदेव प्रसाद मिश्र–कौशल किशोर
पं. राधेश्याम कथावाचक–रामायण
राजा रमेश सिंह–रामविलाप
गोपाल सिंह–सप्तकाण्ड रामायण
नथाराम गौड़–रामायण
धरणीधर शास्त्री–संक्षिप्त रामचरितम्
विद्याभूषण विभु–चित्रकूट चित्रण
शीतल सिंह गहरवार–श्री सीतारामचरितायन
मिश्र बंधु–लवकुश चरित

इस काल में 'साकेत' सबसे महत्त्वपूर्ण काव्य है। 'रामचरित मानस' के पश्चात् हिन्दी में रामकाव्य का दूसरा स्तम्भ 'साकेत' ही कही गयी है। कथा–संयोजन की नवीनता, चरित्राकंन की मौलिकता, भावों की सूक्ष्मता, संवादों की नाटकीयता और शैली की प्राणवत्ता के कारण ''साकेत'' आधुनिक काव्य परम्परा में तो सर्वोच्च स्थान रखता ही है, साथ ही यह हिन्दी साहित्य का गौरव ग्रंथ भी है।[16] गुप्त जी की 'पंचवटी' और 'लीला' तथा हरिऔध जी का 'वैदेही–वनवास' रामकाव्य परम्परा तथा इस युग की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

इसके पश्चात्, छायावादी युग जो सन् 1920 से 1940 तक का कालखण्ड है। इस युग ने भी

रामकाव्य–परम्परा को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 'रामचन्द्रोदय' इस काल की महत्त्वपूर्ण कृति है। पं. रामनाथ ज्योतिषी ने इसकी रचना ब्रजभाषा में की है। सन् 1932 में श्री शिवरत्न शुक्ल द्वारा रचित 'भरत–भक्ति' महाकाव्य भी प्राप्त है। यह रचना भी ब्रजभाषा में है। बिहारी लाल विश्वकर्मा कौतुक की रचना 'कौशलेन्द्र कौतुक' भी रामभक्ति–परक काव्य है। छायावाद के महत्त्वपूर्ण कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित 'राम की शक्ति पूजा' का रामकाव्य परम्परा में विशेष स्थान है। यह मुक्त छंद में रचित है। इसके विषय में प्रो. सेवक वात्स्यायन का मत है कि 'राम की शक्ति पूजा' भक्तिकाव्य नहीं है। वह तो महामानव राम के सबल चरित पर आधारित कवि के बलिष्ठ चिंतन का एक सफल चित्रण है।'[17] छायावाद के उन्नायक कवि सुमित्रानंदन पंत ने भी रामकाव्य परम्परा में 'अशोक वन' नामक लघुगीत काव्य की रचना की। साथ ही बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' द्वारा रचित 'उर्मिला' महाकाव्य रामकाव्य–परम्परा की महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में प्राप्त होता है। इस युग के प्रसिद्ध रामभक्त कवि पं. श्याम नारायण पाण्डेय द्वारा रचित 'तुमुल', 'जय हनुमान', 'त्रेता के दो वीर' और 'बालि–वध' रचनाएँ रामकाव्य–परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। 'तुमुल' में वीरवर लक्षमण और मेघनाद के मध्य हुए भयंकर युद्ध का सजीव चित्रण है। प्रख्यात कथावाचक 'नम्र' जी द्वारा रचित 'वनस्थली' महाकाव्य भी इसी युग का है। साथ पं. राजाराम शुक्ल की प्रसिद्ध रचना 'जानकी–जीवन' भी रामकाव्य–परम्परा को विकसित करती है।

फ़ादर कामिल बुल्के ने भी लगभग इसी समय में प्राचीन और अर्वाचीन रामकथा साहित्य का निरूपण किया और सभी रामकथा की व्यापकता और उसकी मौलिक एकता पर विचार व अध्ययन किया। उनके ग्रंथ 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' (1949) से पता चलता है कि राम वाल्मीकि के कल्पित पात्र नहीं, बल्कि इतिहास पुरुष थे। उनके उद्धरणों ने पहली बार साबित किया कि रामकथा केवल भारत की ही नहीं, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय कथा है। वियतनाम से इंडोनेशिया तक यह कथा फैली हुई है। इसी प्रसंग में बुल्के अपने एक मित्र हॉलैण्ड के डॉक्टर होयकास का हवाला देते थे। डा. होयकास संस्कृत और इंडोनेशियाई भाषाओं के विद्वान थे। एक दिन वह इंडोनेशिया में शाम के वक्त टहल रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि एक मौलाना, जिनकी बगल में कुरान रखी है, वह इंडोनेशियाई रामायण पढ़ रहे हैं। होयकास ने उनसे पूछा, मौलाना आप तो मसलमान हैं, आप रामायण क्यों पढ़ते हैं? उस व्यक्ति ने केवल एक वाक्य में उत्तर दिया और भी अच्छा मनुष्य बनने के लिए! रामकथा के इस विस्तार को फादर बुल्के वाल्मीकि और भारतीय संस्कृति की दिग्विजय कहते थे। इस प्रकार भारत की समस्त आदर्श–भावनाएं रामकथा में, विशेषकर मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा पतिव्रता सीता के चरित्रचित्रण में केन्द्रीभूत हो गई है। फलस्वरूप रामकथा भारतीय संस्कृति के आदर्शवाद का उज्ज्वलतम प्रतीक बन गई है।[18]

छायावादी युग के पश्चात् छायावादोत्तर युग में भी राम कथा पर विपुल साहित्य रचा गया। इस युग में केदारनाथ मिश्र प्रभात द्वारा रचित 'कैकेयी', गोकुलचन्द्र शर्मा कृत 'अशोक–वन', शकुन्तला कुमारी रेणु का 'सती सीता', डॉ. चन्द्र प्रकाश वर्मा कृत 'सीता', सरयू प्रसाद त्रिपाठी मधुकर कृत 'सीता अन्वेषण', आचार्य तुलसी कृत 'अग्नि–परीक्षा', गया प्रसाद द्विवेदी कृत 'नन्दीग्राम', नरेश महता कृत 'संशय की एक रात', 'शबरी' और 'प्रवाद पर्व', डॉ. रामकुमार वर्मा कृत 'उत्तरायण', डॉ. रत्न चन्द्र शर्मा कृत 'निषादराज गुह' रामानन्द शास्त्री कृत 'चित्रकूट' आदि इस युग की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं। इन सभी रचनाओं में रामकथा के पात्रों को परम्परागत देवत्व से मुक्त करके मानवीयता के धरातल पर लाकर खड़ा किया गया है। साथ ही इसे समकालीन समाज से जोड़कर कई सम–सामयिक समस्याओं का समाधान भी किया है। 'शम्बूक' में डॉ. जगदीश गुप्त ने समकालीन समस्याओं को ही खोजने का प्रयत्न किया है। इस रचना में शम्बूक वर्ग संघर्ष का प्रतोक है। साथ ही सरोज गौरिहार कृत ''माण्डवी : एक विस्मृता'', उमादत्त सारस्वत की रचना 'मंदोदरी', शैल सक्सेना की रचना 'वैदेही', नागार्जुन की रचना 'भूमिजा' और सरोजनी अग्रवाल की 'सीता समाधि', इन सभी कृतियों में आधुनिक नारी के उत्थान के स्वर की ही गूँज है। इस युग की अन्य रचनाएं इस प्रकार है –

श्री प्रताप नारायण पुरोहित–श्री रामचरण
हृषिकेश चतुर्वेदी–रामकृष्ण काव्य
राजाराम श्रीवास्तव–लक्षमण शक्ति
स्वामी सत्यभक्त–महात्मा राम
राज नारायण त्रिपाठी–रामराज्य
राधेश्याम द्विवेदी–कल्याणी कैकेयी
हरिशंकर शर्मा 'शंकर'–रामराज्य
कैलाश नाथ वाजपेयी–माण्डवी
मोहन स्वामी–मनमोहिनी रामायण
हरिशंकर सिन्हा–माण्डवी
प्रियदर्शी–उर्मिला
महेश सक्सेना–परित्यक्ता
उमाशंकर नगायच–सीता–निर्वासन
गोविंद अनिल–अयोध्या की एक शाम
सरोजनी प्रीतम–सीता का महाप्रयाण
बालकृष्ण मिश्र–जल समाधि के पूर्व
चन्द्रशेखर मिश्र–सीता
राजकुमारी राठौड़–माण्डवी
भारत भूषण अग्रवाल–अग्निलीक
गुलाब खन्डेलवाल–सीता–वनवास
आशाराम त्रिपाठी–चित्रकूट

उपर्युक्त भक्तिपरक काव्य–कृतियों के अतिरिक्त अन्य कई और स्फुट रचनायें भी रामकाव्य परम्परा में अपना योगदान देती है। राम जैसे आदर्श व्यक्तित्व के प्रति और उनके प्रति व्यापक भक्तिभाव के कारण हर स्तर पर रामकाव्य परक रचनाओं की सृष्टि हुई है। इन स्फुट रचनाओं में डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन की 'जल रहे हैं दीप, जलती है जवानी', नागार्जुन की 'पाषाणी', बालकृष्ण राव की 'निर्वासित सीता का एक गीत', भंवरलाल भट्ट्टा 'मधुप' की 'रावण का परिताप', प्राणेश की 'कहाँ हो राम', डॉ. चन्द्रप्रकाश वर्मा की 'चित्रकूट चिंतन, सरोज केरलारवी की 'आराधना श्रीराम की', माधव शर्मा की 'शबरी', करुणा शंकर शुक्ल 'करुणेश की मंथरा', डॉ. रमेश तिवारी की 'परम प्रभु श्रोराम', आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आधुनिक युग में भी राम काव्यपरक रचनाओं की सृष्टि निरन्तर हो रही है और भविष्य में निरन्तर होती रहेगी। मेरा मानना है कि ये सभी रचनाएँ रामकथा के प्रसंगों को नवीन वैचारिक दृष्टि व भूमिका प्रदान करती हैं।

तुलसीदास रामकाव्य के एकछत्र सम्राट हैं। तुलसी और उनके रामचरितमानस का हिन्दी रामकाव्य परम्परा में महत्त्वपूर्ण स्थान है। रामचरितमानस द्वारा लोग काफी वर्षों से रस और प्रेरणा पा रहे हैं। इस ग्रंथ ने लोकभाषा के माध्यम से जीवन के उपयोगी आदर्शों और मूल्यों को जनसामान्य तक पहुँचाया है। समाज में धर्म के तत्त्वों के निरूपण द्वारा लोकजीवन में उनकी प्रतिष्ठा करना ही इस ग्रंथ का प्रधान उद्देश्य रहा है।[19] रामकाव्य परम्परा का यह देदीप्यमान रत्न है। तुलसीदास ने कवितावली में कहा है कि –

''माता पिता जग जाइ तज्यो,
विधिहु न लिख्यो कछु भले भलाई।''[20]

रामकाव्य परम्परा में तुलसीदास की कीर्ति का स्तम्भ उनका महान् ग्रंथ रामचरितमानस है। इसमें कवि ने मानस रूपी सरोवर के रूपक द्वारा रामकथा को उजागर किया है। तुलसी की लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि उन्होंने अपने काव्य में भोगे गए जीवन का गंभीर व व्यापक चित्रण किया है। तुलसी ने राम के संघर्ष की कथा को अपने समाज तथा अपने जीवन संघर्ष की कथा के अनुसार देखा है। उन्होंने अपने काव्य में न तो वाल्मीकि के राम का वर्णन किया और न ही भवभूति के राम का, बल्कि उन्होंने अपने युग के युग पुरुष के रूप में राम का भावपूर्ण वर्णन किया है। रामकाव्य परम्परा में संस्कृत में जो स्थान वाल्मीकि को प्राप्त है, वही स्थान हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास को प्राप्त है।

''गोरख जगायो जोग
भगति भगायो लोग।''

अतः हिन्दी रामकाव्य परम्परा के उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक युग में रामभक्ति परक रचनाओं में प्रत्येक कवि की रूचि विशेष रूप से है। राम के दिव्य व आदर्श चरित्र ने कृष्ण भक्त–कवियों को भी प्रभावित किया है। रामकाव्य परम्परा का साहित्य ब्रजभाषा और अवधी दोनों में प्राप्त होता है। रीतिकाल तक का रामकाव्य राम के महातम्य का ही परिचय प्रदान करता है। उन सभी काव्यों में राम की परमात्मा रूप में प्रतिष्ठा हुई है और रामकथा के अन्य पात्रों की उपेक्षा हुई है। किन्तु आधुनिक काल में रामकाव्य में

श्रीराम मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित हुये हैं। वे सामान्य मानव को भांति सुख–दुःख का अनुभव करते हैं। साथ ही वह महामानव के रूप में मर्यादा, समाज के प्रति पूर्ण निष्ठा का भाव, समन्वय भावना, भक्ति भावना, अछूतोद्धार, सनातन मूल्यों की प्रतिष्ठा आदि प्रवृत्तियों से आदर्श प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक युग में राम–परक काव्यों में राम को ही नहीं बल्कि अन्य पात्रों को भी रचना का विषय बनाया गया है। नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण ने रामकाव्य परम्परा को नयी दिशा दी तथा कवियों को सीता, उर्मिला, माण्डवी, शबरी, मंथरा, कैकेयी, सुमित्रा आदि पर लिखने को प्रेरित किया है।

तुलसीदास जी ने अपने काव्य में रामकथा के माध्यम से जो आदर्श स्थापित किया है उसके पीछे लोक कल्याण की भावना ही विद्यमान है। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति को अनेक प्रसंगों, घटनाओं के माध्यम से वर्णित किया है। यदि सच्चे अर्थों में कोई व्यक्ति भारतीय संस्कृति से परिचित होना चाहता है तो उसे तुलसी द्वारा रचित रामकाव्य से बढ़कर दूसरा साधन न मिलेगा।

''जब–जब होय धरम की हानी
बाढ़हि असुर, अधम, अभिमानी,
तब–तब प्रभु धर विविध शरीरा,
हरिहि कृपानिधि, सज्जन पीरा।''[21]

इस प्रकार यह लेख रामकाव्य परम्परा वाल्मीकि 'रामायण' से होते हुए निराला की रचना 'राम की शक्ति पूजा' और नरेश मेहता की रचना 'संशय की एक रात' तक का अवलोकन करने के पश्चात् मध्यकालीन रामावत् संप्रदाय के कवियों में तुलसी का स्थान निर्धारण करने का प्रयास करता है। अतः तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' रामायण की प्रत्येक छवि को हमारे समक्ष सशक्त व जीवन्त चित्रित करने में सफल हुई है। तुलसी ने तत्कालीन संस्कृतियों, जातियों, धर्मावलंबियों के बीच समन्वय स्थापित करके दिशाहीन समाज को नई दिशा प्रदान की। तुलसी के समन्वय का यह भाव उनकी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति में भी झलकता है। तुलसी की भाषा की सहजता, सरलता और सम्प्रेषणीयता मानव को सामाजिक आदर्शों व मानवमूल्यों से जोड़ती है। तुलसी के काव्य में संस्कृत, अवधी, ब्रजभाषा आदि भाषाओं का सुन्दर सामंजस्य मिलता है। इस प्रकार तुलसी के मानस की लोकपरक दृष्टि तथा समन्वयवादी विचारधारा मानवजाति को आत्मिक शान्ति का अनुभव कराती है और बाकी रामकाव्यों के बीच अपनी एक अलग जगह बनाती है।

सन्दर्भ

1. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली–110002, सन् 2003, पृ. 100–101.
2. बीजक–कबीर, चौरासी अंग की साखी, भक्ति का अंग
3. ऋग्वेद – दशम् मण्डल
4. वाल्मीकि – उत्तररामचरितम्
5. उत्तररामचरितम् और आधुनिक हिन्दी प्रबंध काव्य परम्परा, डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र, पृ. 35.
6. चन्दरवरदायी – पृथ्वीराज रासो 2/285.
7. हिन्दी के आधुनिक रामकाव्य का अनुशीलन – डॉ. परमलाल गुप्त, पृ. 59.
8. वि.वि. मजूमदार – विद्यापति, पद संख्या 880–883.
9. सं. श्यामसुंदर दास – पद्मावत (संक्षिप्त), पृ. 101.
10. महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ – डॉ. भागीरथ मिश्र, पृ. 84.
11. उत्तररामचरितम् और आधुनिक हिन्दी प्रबंध काव्य परम्परा – डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र, पृ. 42.
12. डॉ. भागीरथ मिश्र –महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ, पृ. 84.
13. बाबूगुलाबराय – हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, पृ. 206.
14. (क)डॉ. भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव', रामभक्ति साहित्य में मधुर उपासना, पृ. 25–52.
    (ख) शिवपूजन सहाय, हिन्दी साहित्य और बिहार
    (ग) प्रयागदत्त, हिन्दी साहित्य को विदर्भ की देन, पृ. 135–154.
    (घ) डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र, उत्तररामचरितम् और आधुनिक हिन्दी प्रबंधकाव्य परम्परा, पृ. 48.
15. मैथिलीशरण गुप्त, साकेत
16. डॉ. परमलाल गुप्त – 'हिन्दी के आधुनिक रामकाव्य का अनुशीलन, पृ. 88.
17. प्रो. सेवक वात्स्यायन, निराला और राम की शक्तिपूजा, पृ. 270.
18. फादर कामिल बुल्के – रामकथा : उत्पत्ति और विकास, भूमिका से
19. मानस कौमुदी – कामिल बुल्के और दिनेश्वर प्रसाद, अनुपम प्रकाशन द्वितीय संस्करण, 1988
20. कवितावली – तुलसोदास
21. तुलसीदास, रामचरितमानस (बालकाण्ड), दोहा 121, चौ. 6.